# विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन

पंतनगर। 27 जून 2025। पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय तथा सोसायटी फार एडवांसमेंट इन एग्रीकल्चर एण्ड एलाइड साइंसेस (एसएएएएस), लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में आज डा. रतन सिंह सभागार में 'चैलेंजेज एण्ड ऑपरचुनिटिज इन एग्रीकल्चर एण्ड एलाइड सांइसेस : टूवार्डस ए सस्टेनेबल फ्यूचर' (सीओएएएस–2025) विषय पर तीन–दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया गया। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डा. सुभाष चन्द्रा, निदेशक, उत्तराखण्ड जैव प्रौद्योगिकी परिषद डा. संजय कुमार, एसएएएएस के अध्यक्ष, लखनऊ एवं सीओएएएस–2025 के आयोजक सचिव डा. बलवीर सिंह, सह आयोजक एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण डा. ए.एस. जीना मंचासीन थे।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कहा कि कृषि का भविष्य सतत एवं नवाचार आधारित होना चाहिए इसके लिए शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार तीनों क्षेत्रों को एकीकृत रूप में कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि आज कृषि को केवल खाद्यान्न उत्पादन तक सीमित नहीं देखा जा सकता बल्कि यह मानव जीवन की गुणवत्ता, पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन और पर्यावरणीय संतुलन का भी आधार है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि यदि हमें सतत कृषि की दिशा में बढ़ना है तो पारंपरिक ज्ञान के साथ–साथ नवीन तकनीकों को भी अपनाना होगा। शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार कार्यों को समन्वित कर ही हम इन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। उन्होंने तीन पी (पेटेंट, प्रोडक्ट एवं पब्लिकेशन) पर ध्यान केन्द्रित करने की भी आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर डा. संजय कुमार ने कृषि क्षेत्र में बढ़ती चुनौतियों जैसे जल संकट, मृदा क्षरण, किसानों की आय में असंतुलन और फसल विविधीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने आधुनिक तकनीकों जैसे स्मार्ट खेती, ड्रोन आधारित निगरानी, जैविक खेती और एग्री स्टार्टअप्स को कृषि की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण अवसर बताया। डा. सुभाष चन्द्रा ने कहा कि कृषि को लाभ का व्यवसाय बनाया जाए। इसके लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को किसानों की पहुंच तक ले जाना होगा। वतावरण में हो रहे बदलाव और वैश्विक स्तर पर पर महशुस की जा रही विभिन्न चुनौतियों के मध्य कृषि में उपयोग किये जाने वाले संसाधनों का समुचित उपयोग तथा उत्पादन को बढ़ाये रखने के लिए नवाचार का प्रयोग करना होगा। उन्होंने बताया कि पंतनगर विश्वविद्यालय इस दिशा में लगातार प्रयासरत है और कई नवाचारों पर कार्य कर रहा है।

सम्मेलन के प्रारम्भ में डा. बलवीर सिंह ने सम्मेलन की रूप–रेखा बतायी। सम्मेलन में धन्यवाद प्रस्ताव डा. ए.एस. जीना द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलसचिव डा. दीपा विनय, सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशकगण, संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। साथ ही सम्मेलन में 200 से अधिक विद्यार्थी एवं वैज्ञानिक ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतिभाग कर रहे है।